भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११५

वर्ष 44 अंक : 1	15.2.2021 सोमवार (जनवरी - फरवरी)	वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

मंगलकारी पर्वों से वर्ष 2021 का शुभारंभ...

3 फरवरी 2021, बुधवार –
गुरुहरि काकाजी महाराज का 69वाँ साक्षात्कार दिन!

भव्यातिभव्य स्वरूप गुरुवर्य योगीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी को अक्षरधाम का कल्पनातीत दर्शन करवा कर, अपने स्वरूप की यथार्थ पहचान यदि न कराई होती, तो प्रगट सत्पुरुष द्वारा प्रभु के अस्तित्व का एहसास संभव न होता। इससे भी अधिक, मानवस्वरूप में दिव्य विभु की गोद में बैठ कर निर्भय व निश्चिंत जीवन जीने की दिशा ही प्राप्त न होती... इसलिए गुरुहरि पप्पाजी ने काकाजी के साक्षात्कार दिन **'3 फरवरी'** को **'गुणातीत समाज का विजय दिन'** बता कर, आश्रितों को इह लोक व परलोक के बीमे से अवगत कराया। गुणातीत समाज की नींव भरने का 'श्री गणेश' हुआ। निर्दोषबुद्धि के क्षितिज गुरुहरि काकाजी ने दिव्यभाव और सुहृदभाव का अमृतपान करा कर, सबको आंतरिक रूप से शूरवीर होने की करामात बताई। जाने-अनजाने में संबंध में आये चैतन्यों की निरपेक्षभाव से एकपक्षीय परवरिश की। कथावार्ता के निरंतर प्रवाह से समय-समय पर ब्रह्मविद्या का पाठ्यक्रम स्पष्ट किया। जैसे कि–

- प्रत्यक्ष गुरु की निष्काम भक्ति के सिवा, मन का तनिक भी आभास अलौकिक भूमिका कही जाये।
- मूर्ति के बल से सिद्धि प्राप्त करें और प्रकृति-पुरुष के भीतर के विषय में यदि खींचे जायें, वो संकल्प का रोग है।
- गुणातीत ज्ञान समझेंगे, तो किसी से विरोध रहेगा ही नहीं।

सच, गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों की ढाल बने गुरुहरि काकाजी ने सभी का अपने लहू से सिंचन किया है। हमारी आध्यात्मिक प्रगति हेतु सब कुछ खुद पर झेला और हमारे लिए सरल-सुगम मार्ग प्रशस्त किया। उनका ऋण तो चुका ही नहीं सकते, लेकिन यदि उस ऋण की ओर नज़रमात्र भी रखेंगे और उनके किये अथक् परिश्रम को समझ कर उनके बताये मार्ग पर चलने की सुरुचि रखेंगे, तो भी वे हमें निहाल-निहाल कर देंगे। कलियुग में सतयुग की शांति बख़्शिश में दे देंगे। सो, साक्षात्कार दिन पर उनके निम्न आशीर्वाद का मनन-चिंतन करें और प्रगट सत्पुरुष को दिव्य चक्षुओं से निहारने की कला सीखें –

'बहुत जाना, बहुत सुना... लेकिन अब ऐसे साक्षात् गुणातीत स्वरूप और उनके अनुभवी मुक्तों के समक्ष अज्ञानी होकर नम्रभाव से वर्तेंगे, तो गुणातीत ज्ञान भीतर में दृढ़ होने में देर नहीं लगेगी।'

प.पू. स्वामिश्री गुरुहरि योगीजी महाराज ने संपूर्ण जीवन दौरान अपने सामर्थ्य को छुपा कर, केवल ज्ञानगरीबी रखते हुए ऐसे समर्थ के ज्ञान का सभी को अनुभव कराया है।

अब हम सभी को इतनी प्रतीति तो हो ही गई है कि प.पू. स्वामिश्री हमारी पुकार सुनते हैं। परंतु, हमारे अव्यक्त मंसूबे – जो हठ, मान और ईर्ष्या की क्षुद्र वृत्तियों का ही पोषण करते हैं और 'स्व' की अस्मिता ही दृढ़ करवाते हैं, उनसे छुटकारा दिलाने और हमारे उस मायिक मन को दिव्य बनाने के लिए वे अति निष्ठुर बन कर, जब हमारी मंशाएँ पूरी नहीं करते-करवाते, तब अंतर मायूस हो जाता है। लेकिन, यह प्रगट प्रभु की प्रसन्नता है। स्वरूप के साथ अति दृढ़ संबंध होने की या एकांतिक की कृपा का प्रतीक है। सहज पीछे हट कर अंतर्दृष्टि करेंगे और छोटे या बड़े प्रसंग पर सरल रह कर प.पू. स्वामिश्री की ओर ही दृष्टि रखेंगे, तो सत्य दर्शन होता ही जाएगा और वे जो कुछ कर रहे हैं या करवा रहे होंगे, वह हमारे चैतन्य के विकास के लिए है – यह दृढ़ता से माना जाएगा।

सो, गुरु गुणातीत ने 'काल और ज्वर' – इन दोनों में से जैसे केवल महाराज की इच्छा को ही स्वीकार किया, वैसे ही हम भी हमारे मन, बुद्धि और चित्त के समझौतों, कल्पनाओं और चिंतनों का साथ न देकर, उनसे अलग हो जाएँ। प्रमाणिकता से पलभर बिलकुल तटस्थ होकर, स्वामिजी में से जो आये, उसे मान्य करके, उसके मुताबिक़ सेवा-भक्ति करते रहें–यही अभ्यर्थना!

अंत में, गुरुचरणों में प्रार्थना करते हुए इतना बल मांगे कि हमारा टेलीफोन जब आपसे लगे, तब आपकी बात ना सुन कर, हम अपनी ही बात कह कर समय पूरा न करें। साथ ही, कई बार तो आपकी स्पष्ट आवाज़ सुनने के बावजूद भी, असमंजस में न रहें कि यह आप कह रहे हैं या हमारे भीतर के देवता की प्रतिध्वनि है? इस बारे आप हमें सच्ची सूझ देना!

–प.पू. काकाजी महाराज

15 फरवरी 2021, सोमवार –

ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी का प्राकट्य दिन!

प्रभु हर एक को कोई न कोई गुण बख़्शिश में देते हैं। जैसे कि **प.पू. गुरुजी** अकसर कहते हैं कि – ***जगत में हम जिस तरीके से चलते हैं, उसी ढंग से हम सत्संग में चलते हैं; केवल ध्येय बदल जाता है।***

अखूट विश्वास, असीम श्रद्धा, अगाध माहात्म्य, स्वरूपनिष्ठा के मूर्त स्वरूप प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी ने जिस प्रकार गुरुवर्य योगीजी महाराज और तत्पश्चात् उनके तद्वद्भाव को पाये उत्तराधिकारी स्वरूपों की रुचि-अभिप्राय के प्रति जो तीव्र अभीप्सा रखी, वो उनके बचपन के निम्न प्रसंग से ख्याल पड़ता है– पिता गुरुहरि पप्पाजी (बाबुभाई) के साथ जब वे मोम्बासा में रहते थे, तब रमेशभाई के रूप में अक्षरविहारीस्वामीजी को टेबल टेनिस खेलने का खूब शौक़ था। सो, क्लब के वे मेम्बर बने। लेकिन, छोटे होने के कारण खेलना नहीं आता था। वहाँ तो निपुण लोग खेलने के लिए आते थे, इसलिए उन्हें कोई खेलाता भी नहीं था। फिर भी, रमेशभाई गरज़ से जल्दी जाकर वहाँ बैठ जाते। चार-पाँच दिन लगातार वे यूं गये। छठे दिन ऐसा हुआ कि बॉल इधर-उधर होने पर उसे लौटाने वाला बॉय उस दिन नहीं आया था। तो, रमेशभाई बॉल पकड़ कर देने लगे। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ, तो एक मेम्बर ने रमेशभाई के प्रति लगाव वश उनसे पूछा – *तुझे भी खेलना है?* और फिर उस व्यक्ति ने रमेशभाई को टेबल टेनिस खेलना सीखा दिया। यह प्रसंग सिखाता है कि जगत में रहते हुए लोगों को अपनी इगो आड़े आती है; लेकिन, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को जिस चीज़ का शौक़ था, उसे सीखने की ग़रज़ से उन्होंने बहुत छोटा कार्य भी किया। उनका यही इगोलेस रवैया प.पू. बापा, स्वरूपों एवं संबंध वाले मुक्तों की सेवा के लिए सार्थक सिद्ध हुआ। प.पू. बापा कहते – नीची टेल मळे तो माने भाग्य जो...(छोटी सेवा करने को मिले, उसे सौभाग्य मानना...) सो, प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के प्राकट्य पर्व पर भगवान स्वामिनारायण एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना कि इनसे प्रेरणा लेकर, हम इनकी राह पर चल कर जीवन धन्य बनायें।

16 फरवरी 2021, मंगलवार –

बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती एवं ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज की जयंती!

बसंतपंचमी के मंगलकारी दिन **शिक्षापत्री जयंती** और **ब्रह्मस्वरूप शास्त्रीजी महाराज** की **प्राकट्य तिथि** होना कैसा अद्भुत संगम कहा जाये! भगवान स्वामिनारायण ने सभी शास्त्रों का निचोड़ एक छोटी-सी पुस्तिका में समाविष्ट कर दिया, जो कि केवल स्वामिनारायण संप्रदाय ही नहीं, बल्कि सभी धर्म के लोगों - जनसमुदाय के लिए उपयोगी सिद्ध हो और... **भगवान स्वामिनारायण द्वारा शिक्षापत्री**

में ही प्रच्छन्न रूप से निर्दिष्ट अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना को गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने उजागर करके, अक्षरसहित पुरुषोत्तम की आराधना दिगंत में फैलाने का दुर्लभ कार्य किया।

दरअसल तो जाति, धर्म, वर्ण को 'ब्रह्म' के एक सूत्र में बांध कर, मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने अपने तीन प्रसन्नता पात्र – अनादि महामुक्त भगतजी महाराज, जागास्वामी और कृष्णजी अदा को ब्रह्म और परब्रह्म के ऐक्य की प्रतीति करा कर मानो **'अक्षरपुरुषोत्तम संस्था'** के बीज बो दिये! वड़ताल संस्था में रहते हुए खूब कसनी सह कर, नम्रता रख कर इन्होंने स्वामीश्री के तीनों कृपापात्रों का सेवन करके अपने ध्येय प्राप्ति के लिए वड़ताल संस्था को छोड़ा और... युगल उपासना का प्रवर्तन करने क्रांतिकारी कदम निडरता से उठाया। मुट्ठीभर संतों - हरिभक्तों का ही साथ-सहकार होते हुए भी उन्होंने एक अटूट विश्वास से न केवल पाँच मंदिरों का निर्माण किया, वरन् श्रीजी महाराज के सिद्धांत को पकड़े रख कर अपने संबंध वाले किसी को भी अभाव-अवगुण के मार्ग पर चलने नहीं दिया। इस सिद्धांत का सभी अनुसरण करें, इस हेतु इन्होंने जो अनुशासन रखा था, उसकी जरूरत समझें,
उन्होंने जो कसनी सह कर आज हमें सुखी किया है, उसकी महत्ता समझें
और
गुणातीत विभूति **गुरुहरि पप्पाजी** की निम्न परावाणी से **'शिक्षापत्री'** का माहात्म्य जानें...

अक्षरधाम के मुक्त जब देह धारण करके पृथ्वी पर आते हैं, तो वे भी दुनिया की रीति से जीते हो जाते हैं। यह लोक ही ऐसा है कि जिसमें मुक्त भी ओतप्रोत हो जाते हैं। परंतु, इस लोक में रहते हुए किस प्रकार सुखी रह सकते हैं? यह बताने के लिए महाराज ने शिक्षापत्री प्रदान की। बसंतपंचमी इसका प्रागट्य दिन! इस लोक में भी अक्षरधाम के सुख के भोक्ता बनें और सुखी ही रहें उसका उपाय शिक्षापत्री में बताया है।

ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ना ही श्रुति है। *प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूप मिले हैं। उनके रूप होकर, उनके संबंध वालों की माहात्म्य युक्त सेवा किया करें वही श्रुति है।* ***शिक्षापत्री का 116वाँ श्लोक श्रुति है।*** *इसमें* ***महाराज*** *कहते हैं –*

ब्रह्मरूप होकर बैठे नहीं रहना, बल्कि मेरा कार्य करते हो जाओ। *जो-जो मेरे संबंध वाले हैं, उनका सुहृदभाव से जतन करके, उन्हें मेरी मूर्ति में जोड़ते हो जाओ। इस प्रकार महाराज की सेवा करने योग्य बनो। इस हेतु पहले ब्रह्मरूप होओ और फिर मेरी सेवा करो।*

यह ***श्रुति*** *है, जिसे* ***कोई बदल नहीं सकता। लेकिन, ब्रह्मरूप होने की रीत अलग-अलग युग में बदल सकती है, जो स्मृति कहलाती है।*** *गुणातीतभाव में रहने वाले सत्पुरुष ज़माने के अनुसार बदलाव करते हैं।*

शिक्षापत्री के प्रागट्य दिन पर शिक्षापत्री का पठन करके, उसे समझ कर पल-पल के वर्तन में लाने का बल देने कृपा करें यही श्रीहरि के चरणों में प्रार्थना।

गुरुवर्य योगीजी महाराज के चरणों में बिराजे सांकरदा मंदिर के महंत प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी

वर्ष 2020 यानि–कोरोना के प्रकोप से गुणातीत समाज के कई आत्मीय मुक्तों की स्थूल विदाई का साल! मई से लेकर अक्तुबर दौरान जिन संतों-सेवकों ने अक्षरधामगमन किया, उन सभी की अनुपम सेवा और दर्द से हम उबर भी नहीं पाये थे कि जिन्होंने प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के स्वधामगमन के बाद एक वर्ष पूर्व ही सांकरदा मंदिर की बागडोर संभाली थी, ऐसे **सद्गुरु संत प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी** ने 77 वर्ष की उम्र में 24 दिसंबर को देहत्याग किया। कोरोना महामारी से ग्रस्त सांकरदा मंदिर के कई मुक्तों की सेवा, देखभाल व परवरिश करते हुए, वे स्वयं महामारी की चपेट में आए और एक महीने तक सबसे धुन-भजन करवा कर उन्होंने अक्षरधामगमन किया। पूरे गुणातीत समाज के लिए तो यह घटना दु:खद थी ही, परंतु सांकरदा मंदिर के लिए तो बहुत ही बड़ी खोट कही जाये; क्योंकि एक वर्ष पहले 21 दिसंबर को तो सांकरदा के संतों, सेवकों और बहनों ने अपने प्राणपुरुष **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** का स्थूल संबंध खोया था और अब ये अप्रत्याशित घटना घटी।

लेकिन, हरि इच्छा को ही सर्वोपरि जान कर और भगवान स्वामिनारायण के प्रति अनन्य निष्ठा के बल व प्रगट ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी, प.पू. गुरुजी, कोठारीश्री प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी एवं प.पू. भरतभाई-प.पू. वशीभाई की हुँफ से, पू. बापुस्वामीजी के संग सांकरदा के सभी संत, सेवक और बहनें संभल गए और 5 जनवरी 2021 को सांकरदा में प.पू. निष्कामस्वामीजी की त्रयोदशी की महापूजा संपन्न करके 6 जनवरी की सुबह महीसागर में उनके अस्थिपुष्प विसर्जित किये।

प.पू. निष्कामस्वामीजी का जन्म 31 अगस्त 1944 को जन्माष्टमी के मंगल दिन गुजरात-सौराष्ट्र के **सरदारगढ़ गाँव** में हुआ था। पढ़ने में वे खूब होशियार थे और मंसूबे थे कि अमेरिका जाकर खूब पढ़ कर डॉक्टर बनना है। इसी दौरान गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी महाराज माणावदर और आस-पास के गाँवों में विचरण के लिए पधारे थे। इन दोनों का प्रथम दर्शन करते ही प.पू. निष्कामजीवनस्वामिजी को अंतर में खिंचाव हुआ।

आर्षदृष्टा पुरुष प.पू. काकाजी ने उनका चैतन्य परख कर कहा था–

यह लड़का भविष्य में हमारा काम करेगा और खूब नाम रोशन करेगा।

मानो गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी के संकल्प से ही प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी प्रभुभक्ति के रंग में रंग गये। और... प.पू. बापा ने जब उनसे बोला – *कहो, साधु होऊँगा।* तो, घर में विरोध होने के बावजूद भी उन्होंने साधु होने के लिए – अनेक चैतन्यों के डॉक्टर बनने 'हाँ' कर दी। फलस्वरूप 9 दिसंबर को पार्षदी दीक्षा ली और 1965 बसंतपंचमी – शिक्षापत्री जयंती एवं गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की प्राकट्य तिथि के महामंगलकारी अवसर पर भागवती दीक्षा प्राप्त की। 1966 में संस्था द्वारा विमुख किये जाने पर प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की निश्रा में अन्य 37 संतों के साथ वे सोखड़ा मंदिर में रहने आये। बाद में, **प.पू. काकाजी द्वारा सांकरदा गाँव में बनवाये गुणातीत समाज के प्रथम मंदिर में प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी की निश्रा** में भगवान भजने लगे। प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को गुरुहरि योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर न केवल उनका सेवन किया, बल्कि कई मुक्तों के अंतर में उनका माहात्म्य सिंचन किया। अपनी कार्य-कुशलता से सांकरदा मंदिर की कई महत्त्वपूर्ण सेवाओं का भार उन्होंने अपने कंधों पर लिया था। यूँ कहा जाये कि सांकरदा मंदिर की वे रीढ़ की हड्डी थे।

2018 दिसंबर में **पवई के भाइयों** ने सांकरदा मंदिर का पुर्ननिर्माण करवाया और गुणातीत समाज के सभी केन्द्र के मुक्तों ने वहाँ **'काकाजी-पप्पाजी बंधुजोड़ी शताब्दी महोत्सव'** मनाया। तब प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। पर, प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी द्वारा सारा संचालन कराके उन्होंने सभी को एहसास कराया कि **अब निष्कामजीवनस्वामी द्वारा वे सांकरदा मंदिर से जुड़े चैतन्यों का विकास करेंगे।**

और... प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी के अक्षरधामगमन होने पर प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी सांकरदा मंदिर के महंत रूप में नियुक्त हुए। लेकिन वे हमेशा सेवक का सेवक बन कर रहे। साथ ही जैसे कि **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी** ने उन्हें विशिष्ट आशीर्वाद दिया था –

'तुम अनोखे मायातीत साधु हो। तुम कभी भी कहीं बंधोगे नहीं।'

सच, प्रत्येक परिस्थिति में प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी स्थिर रहे। सांकरदा मंदिर के विकास हेतु अंतिम श्वास तक देश-विदेश में विचरण करते रहे।

उन्होंने कभी भी किसी भक्त को अपने में नहीं जोड़ा और न ही अपनी कोई अलग पहचान दी।

65 साल की उम्र तक तो मंदिर में अपने लिए कोई निजी कमरा तक नहीं रखा।

किसी से कोई अपेक्षा भी नहीं रखी। यही उनकी साधुता का दर्शन था।

पिछले वर्ष अन्नकूट के अवसर पर सांकरदा नूतन मंदिर में विविध प्रकार के व्यंजनों से श्री ठाकुरजी को थाल धरा कर उन्होंने सांकरदा मंदिर की अंतिम सेवा की और... अन्नकूट का प्रसाद वितरित करने निमित्त हरिभक्तों को मानो अंतिम दर्शन देने वे विचरण में भी गये !

यूँ, प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी ने अपने जीवन से श्रेयार्थियों के लिए एक आदर्श स्थापित किया कि जीवन की धन्यता तो अपने ईष्टदेव की मरज़ी में देह को चंदन की भाँति घिस देने में - याहोम होने में ही है।

उनके जैसी गुरुभक्ति का अंशमात्र भी हम अपने जीवन में अपनायें, वही उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलि कही जाये...

अलविदा... पूज्य दिनकरभाई देसाई

गुणातीत समाज में गुरुहरि पप्पाजी के प्रति दृढ़ निष्ठा रख कर एवं प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी को अपने गुरु के रूप में स्वीकार करके सांकरदा मंदिर के विकास में जिन्होंने खूब अपनेपन से आख़िरी सांस तक योगदान दिया, ऐसे **सर्वदेशीय भक्तराज पू. दिनकरभाई देसाई** ने 97 वर्ष की आयु में प्रसन्नचित्त से अक्षरधामगमन किया।

1942 के **भारत छोड़ो आंदोलन** में भाग लेने के कारण, **स्वतंत्रता सेनानी पू. दिनकरभाई देसाई ने 16 महीने कारावास में व्यतीत किये।**

महात्मा गांधी द्वारा संचालित **गुजराती विद्यापीठ के प्रथम दल में** वे **स्नातक** हुए।

तत्पश्चात् **1959** में **गुजरात विश्वविद्यालय से एम.ए.** करने के बाद, **1963** में **वकील** की डिग्री हासिल की।

1971 में वे गुजरात के **नवसारी जिले के विधायक** चुने गये।

1972 में भारत की आज़ादी के 25 वर्ष पूरे होने पर पू. दिनकरभाई **तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा ताम्रपत्र से सम्मानित** किये गये।

1980 तक वकालत करने के बाद उसी वर्ष व **1990 में गणदेवी के विधायक नियुक्त** हुए।

2012 में **राष्ट्रपति भवन** में उन्हें **सम्मानित** किया गया

और

ये एक मात्र ही ऐसे स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी ने तीन बार सम्मानित किया!

परंतु, बाह्यदृष्टि से शूरवीर-प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के मालिक पू. दिनकरभाई सत्संग में तो रंक बन कर रहे।
गुरुहरि पप्पाजी के श्रीचरणों में दास के दास वर्त कर, किसी सम्मान की अपेक्षा रखे बिना भक्ति में लीन रहे।
एकांतिकी भक्ति करके स्वरूपनिष्ठा एक पप्पाजी की रख कर,
सर्वधर्म के प्रति समानता और उन्हीं की आज्ञा से सर्वदेशीय बन कर,
खूब कसनी सह कर गरज़ू बन कर सेवा की।
साथ ही साथ, अपने पुत्र **पू. पियुषभाई**–जो कि वर्तमान समय में नवसारी के लोकप्रिय विधायक हैं,
उन्हें व संपूर्ण परिवार को सत्संग की विरासत देकर जीवन का सही मार्ग प्रदान किया।
बड़ों के साये से मानो एक रक्षाकवच का एहसास होता है।
सो, पू. दिनकरभाई देसाई का निधन होना गुणातीत समाज के लिए एक खोट कही जाये, परंतु अपने आचार-व्यवहार, समर्पण और निरपेक्ष सेवा जैसे गुणों द्वारा वे सदैव सभी के हृदय में रह कर भावि पीढ़ी को प्रेरित करते रहेंगे।

Statement about ownership and other particulars about newspaper—

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1.	Place of Publication	:	**Yogi Divine Society,** 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar- III, Delhi-52
2.	Periodicity of its Publication	:	Bi-Monthly
3.	Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4.	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar - III, Delhi-52
5.	Publisher's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
6.	Editor's Name	:	
	Nationality	:	As above
	Address	:	
7.	Owner's Name	:	Yogi Divine Society
	Nationality	:	Indian
	Address	:	'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Signature of Publisher

Date: 15 February, 2021

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 15.2.'21, सोमवार – **प.पू. अक्षरविहारीस्वामीजी का प्राकट्य दिन**

(2) दि. 16.2.'21, मंगलवार – **बसंतपंचमी, शिक्षापत्री जयंती,**
सद्. निष्कुलानंदस्वामीजी, सद्. ब्रह्मानंदस्वामीजी
एवं **गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की जयंती**

(3) दि. 20.2.'21, शनिवार – सद्. गोपालानंदस्वामीजी की जयंती

(4) दि. 23.2.'21, मंगलवार – एकादशी, व्रत

(5) दि. 7.3.'21, रविवार – **गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**

(6) दि. 9.3.'21, मंगलवार – एकादशी, व्रत

(7) दि. 11.3.'21, गुरुवार – महाशिवरात्रि, व्रत

(8) दि.13.3.'21, शनिवार – प.पू. गुरुजी का 84वाँ प्राकट्य दिन

(9) दि.14.3.'21, रविवार – प.पू. गुरुजी की 84वीं प्राकट्य तिथि

R.N.I. 28971/77 *(Air Mail)*

'Bhagwatkripa' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**
'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 4709 1281

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A-6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052